

Research Paper

मधुबनी जिले के लखनौर प्रखण्ड की शिक्षित गृहणियों का परिवारिक वित्तीय प्रबंधन में निर्णय लेने सम्बन्धी भूमिका का अध्ययन

सुधीरा कुमारी

शोधार्थी

गृहविज्ञान विभाग

ललित नारायण मिथिला वि०वि० दरभंगा-बिहार

सार

यह शोध मधुबनी जिले के लखनौर प्रखण्ड में रहने वाली शिक्षित गृहणियों के जनसांख्यिकी चरों का पता लगाता है और परिवार के वित्तीय प्रबंधन से सम्बन्धित निर्णय लेने के वित्तीय ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास का विश्लेषण करता है। शोध में 130 परिवारों की शिक्षित गृहणियों से एक स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से साक्षात्कार एवं अवलोकन किया गया, साथ ही प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन और सहसंबंध परीक्षणों का उपयोग करके विश्लेषण किया गया। परिणाम से स्पष्ट है कि शिक्षित होने के बाद भी महिलाएं वित्तीय सम्बन्धी निर्णयगत व्यवहार से कोशिश दूर है। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि अधिकांश महिलाओं में वित्तीय साक्षरता की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में बजट बनाने, बचत करने और निवेश करने सहित वित्तीय प्रबंधन करने में बुनियादी ज्ञान का अभाव है, साथ ही महिलाएं आर्थिक स्वतंत्रता से भी वंचित हैं, जो परिवार के आर्थिक विकास में योगदान करने में सक्षम बनाती हैं। वित्तीय प्रणाली की जटिलता बढ़ने के साथ-साथ महिलाओं के लिए वित्तीय साक्षरता का महत्व भी बढ़ता जा रहा है, जिससे व्यक्तिगत सफलता, परिवार और सामाजिक प्रगति तीनों ही प्रभावित होती हैं। गृहणियों का शिक्षित होकर वित्तीय अवधारणाओं को समझना, समझदारी भरे निर्णय लेना और अच्छी वित्तीय आदतें वित्तीय सुरक्षा प्राप्त करने में मदद करती है।

मुख्य बिंदु: शिक्षित गृहणियां, वित्तीय प्रबंधन, निर्णय, पारिवारिक, वित्तीय साक्षरता।

परिचय

आज की जटिल आर्थिक दुनिया में बुद्धिमानी के साथ प्रबंधन करना एक अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण कौशल है और आधुनिक समय में शिक्षा किसी भी महिला के अस्तित्व के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। यह सामाजिक बदलाव का एक साधन है। इसमें कोई शक नहीं कि शिक्षा न केवल सोच का दायरा बढ़ाती है बल्कि अज्ञानता व अंधविश्वास से आजाद भी करती है। यह गृहणियों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करती है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाते हुए, उसे प्रभावित करती है, जिससे संसाधनों तक उनकी पहुँच बढ़ती है और बातचीत करने का कौशल बेहतर होता है, इतना ही नहीं आर्थिक रूप से सशक्त होने पर परिवार के फैसलों में उनकी मोल-भाव करने की क्षमता और पैसे से जुड़े फैसलों में उनकी बात का महत्व बढ़ जाता है। कई शोधों से यह साबित हुआ है कि परिवार में गृहणियों की निर्णय लेने की क्षमता और शिक्षा के स्तर के बीच सीधा संबंध है। शिक्षित होने से तात्पर्य उन क्षमताओं, गुणों, धन के उपयोग, सूचनाओं और प्रबंधन के संबंध में सोच-समझकर विवेकपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता से है। आधुनिक समय में महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है, यह शिक्षित होकर ट्रेन, हवाई जहाज, व्यापार चला रही है, उससे संबन्धित कठोर फैसले ले रही है, चाँद की धरती पर कदम रखकर अपना नाम अंकित करवा रही है, किंतु जब बात पारिवारिक वित्तीय प्रबंधन संबंधी निर्णय लेने की आती है, तो यही गृहणियां परिवार के पुरुष सदस्यों या कभी-कभी उन रिश्तेदारों पर निर्भर हो जाती हैं, जिन्हें अधिक ज्ञान रखने वाला पुरुष प्रतिनिधि माना जाता है। इन कारणों से महिलाओं में वित्तीय नियंत्रण को लेकर शक्तिहीनता की भावना उत्पन्न होने लगती है। प्राचीन काल से भारत के पुरुष प्रधान समाज में परिवार के वित्तीय प्रबंधन सम्बन्धी निर्णय लेने की मुख्य शक्ति पुरुषों के ही हाथों में रही है और महिलाओं की भूमिका सदैव से गौण या सहायक ही रही है। द इकोनॉमिक टाइम्स (2026) ने अपने सर्वेक्षण में पाया कि “भारत में लगभग 70.3 प्रतिशत महिलाएं शिक्षित हैं, किंतु बेहतर करियर एवं आय होने के बावजूद भारत में हर 3 में से 1 महिला कभी भी वित्तीय निर्णय अकेले नहीं लेती, स्वतंत्र रूप से वित्तीय निर्णय लेने के मामले में महिलाओं की भागीदारी अभी भी कम है। भारत में महिलाएं अधिक कमा रही हैं, व्यवसायों का नेतृत्व कर रही हैं और विभिन्न उद्योगों में नेतृत्वकारी भूमिकाएं निभा रही हैं। फिर भी जब पैसे के प्रबंधन की

बात आती है, तो कई महिलाएं पीछे रह जाती हैं। निवेश का चुनाव करना, बीमा खरीदना और सेवानिवृत्ति की योजना बनाना, ये निर्णय अक्सर पति, माता-पिता या परिवार के किसी अन्य सदस्य पर छोड़ देती हैं। यह अंतर क्षमता का नहीं बल्कि आत्मविश्वास, पहुंच और वित्तीय साक्षरता का है। महिलाएं घरेलू आय और व्यापक अर्थव्यवस्था में पहले से कहीं अधिक योगदान दे रही हैं, लेकिन वित्तीय स्वतंत्रता कई महिलाओं के लिए अभी भी एक अधूरा सफर है।” एन. नित्यानंद और मैया उमेश (2020) ने अपने शोध पत्र के निष्कर्ष में पाया कि “केवल 18% महिलाएं ही अपने घरेलू वित्त संबंधी निर्णय लेती हैं।” सिंह चेतना और कुमार राज (2017) के शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि “भारतीय महिलाएं हर मामले में पुरुषों के बराबर हैं, फिर भी वे वित्तीय निर्णय लेने के लिए परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर हैं। महिलाओं में धन प्रबंधन साक्षरता को मजबूत करना और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बुनियादी वित्तीय साक्षरता के संबंध में जागरूकता कार्यक्रम तैयार करना आवश्यक है।” बर्नासेक और बाज्तेल्समिट (2002) ने अपने शोधपत्र के निष्कर्ष में पाया कि “जब महिलाएं परिवार की कमाई में कुछ आर्थिक योगदान देती हैं, तो परिवार के आर्थिक फैसलों पर उनका असर ज्यादा होता है। वे बचत और निवेश के फैसलों में ज्यादा शामिल और केंद्रित पाई जाती हैं और जिन शिक्षित महिलाओं के आर्थिक योगदान कम होते हैं या नहीं होते हैं, घर के आर्थिक फैसलों में उनके शामिल होने की संभावना कम होती है।” जेन और रॉय (2019) ने अपने अध्ययन में पाया गया कि “महिलाओं का सशक्तिकरण समाज में एक नया चलन है। हालांकि यह व्यावहारिक नहीं है। सशक्त महिलाएं वित्तीय संसाधनों के मामले में अभी भी अपने परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर हैं। उन्हें घरेलू वित्त प्रबंधन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, इसके साथ ही उन्हें समाज के पुरुष सदस्यों की मदद लिए बिना, अपनी बचत को लाभकारी निवेश विकल्पों में स्वयं ही निवेश करना चाहिए। आज की महिलाओं को विद्यालय स्तर से ही निवेश और अपनी बचत से बेहतर भविष्य के लिए मिलने वाले लाभों के बारे में सिखाया जाना चाहिए। भविष्य के लिए बचत करने से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा और उन्हें वित्तीय प्रबंधन सीखने में मदद मिलेगी। वित्तीय ज्ञान और साक्षरता से महिलाओं का सशक्तिकरण बढ़ेगा और समाज को लाभ होगा।” यादव एवं अन्य (2023) ने अपने अध्ययन में पाया गया कि “वित्तीय जगत में समझदारी से निवेश करने से व्यक्ति के गुमराह होने की संभावना कम हो जाती है, विशेष तौर पर महिलाओं को इस बारे में जागरूक होना चाहिए, क्योंकि वे घर के कई फैसले लेती हैं और हर भारतीय परिवार की रीढ़ होती हैं। महिलाएं बजट बनाने और घरेलू खर्चों का प्रबंधन करने में कुशल होती हैं, किंतु इनमें से कई गृहणियां महत्वपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में हिचकिचाती हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके पिता, भाई और पति ऐसे वित्तीय निर्णय लेने के मामलों में अधिक योग्य हैं।”

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध परिवार के भीतर गृहणियों की वित्तीय प्रबंधन संबंधी भूमिकाएं, लैंगिक पूर्वाग्रह और रूढ़ियां वित्तीय प्रबंधन संबंधी निर्णय लेने में उनकी भागीदारी को कैसे प्रभावित करती हैं। क्या गृहणियों का केवल शिक्षित होना काफी है या वित्तीय शिक्षा देने की आवश्यकता है यह समझने में मदद करेगा।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षित गृहणियों के जनसांख्यिकी चरों का पता लगाना।
- शिक्षित गृहणियों में वित्तीय निर्णय लेने में ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है। शोध मधुबनी जिले के लखनौर प्रखण्ड में रहने वाली शिक्षित गृहणियों के जनसांख्यिकी चरों के साथ-साथ उनके वित्तीय प्रबंधन से सम्बंधित निर्णय लेने के वित्तीय ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास का विश्लेषण करता है। शोध में 130 परिवारों की शिक्षित गृहणियों से एक स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से साक्षात्कार एवं अवलोकन किया गया। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तरों का सहारा लिया गया है। आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय विधियों जैसे-त-क पद्धति, मध्यमान, मानक विचलन और सहसंबंध परीक्षणों का उपयोग करके विश्लेषण किया गया है, तथा आकड़ों को प्रदर्शित करने के लिए रेखाचित्रों का भी सहारा लिया गया है।

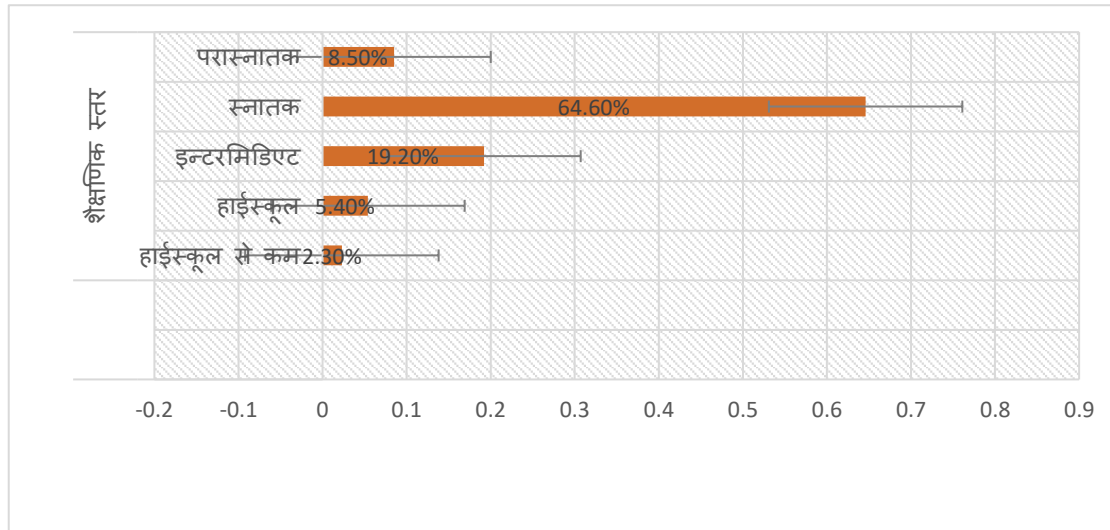
परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका सं01 उत्तरदाताओं की आयु संबंधी विवरण

पैमाना	श्रेणी	उ0दा0 सं0-130
		माध्य $\pm$ मा0 वि0
आयु	30-40	37.63 $\pm$ 10.08
	40-50	
	50-60	

तालिका सं0 1 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल महिला उत्तरदाताओं की आयु 30-60 वर्ष थी।

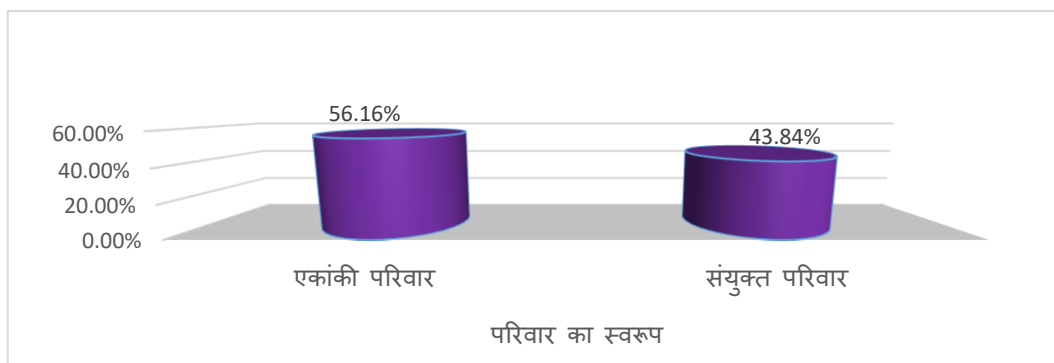
आरेख सं0 2 महिला उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर संबन्धी विवरण



आरेख सं02 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 64.6 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता स्नातक, एवं उससे कम 19.23 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता इन्टरमीडिएट, इसी क्रम में 8.46 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता पारास्नातक, 5.4 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता हाईस्कूल और सबसे कम 2.3 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता हाईस्कूल से भी कम पढ़ी-लिखी है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सबसे अधिक गृहणी उत्तरदाता स्नातक तक शिक्षित है।

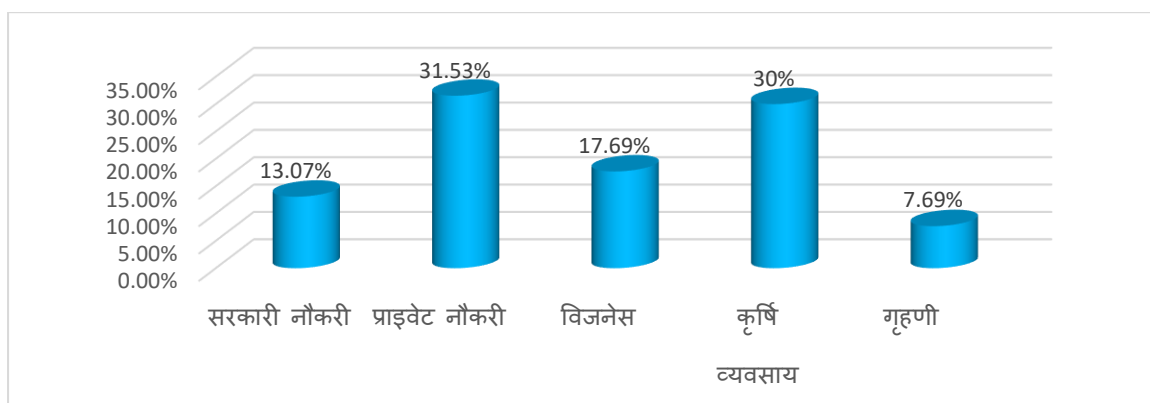
आरेख सं0 3 उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप संबन्धी विवरण



आरेख सं0 3 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 56.16 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता एकांकी परिवार से और 43.84 प्रतिशत गृहणी उत्तरदाता संयुक्त परिवार के साथ रहती है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सबसे सर्वाधिक गृहणी उत्तरदाता एकांकी परिवार के साथ रहती है।

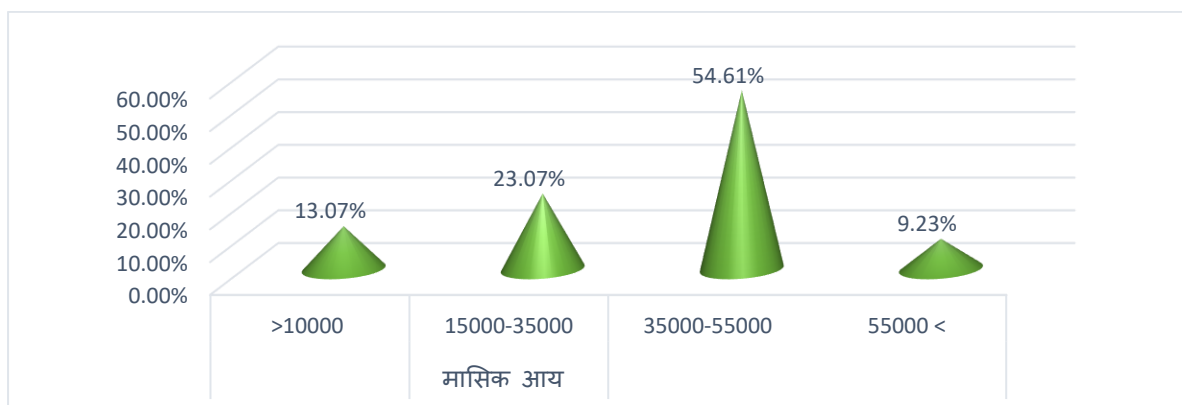
आरेख सं0 4 उत्तरदाताओं का व्यवसाय संबन्धी विवरण



आरेख सं0 4 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 31.53 प्रतिशत महिला उत्तरदाता का व्यवसाय प्राइवेट नौकरी, उसके बाद 30 प्रतिशत महिला उत्तरदाता कृषि कार्य, इससे कम 17.69 प्रतिशत महिला उत्तरदाता का व्यवसाय विजनेस, इससे कम 13.07 प्रतिशत महिला उत्तरदाता का व्यवसाय सरकारी नौकरी और सबसे कम 7.69 प्रतिशत उत्तरदाता गृहणी थी।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिला उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी में कार्यरत थी। आजकल महिलाएं शिक्षित होने के बाद प्राइवेट स्कूल कॉलेज कम्पनी मॉल अन्य आदि में कार्य करके घर के कार्यों में अपना योगदान दे रही है।

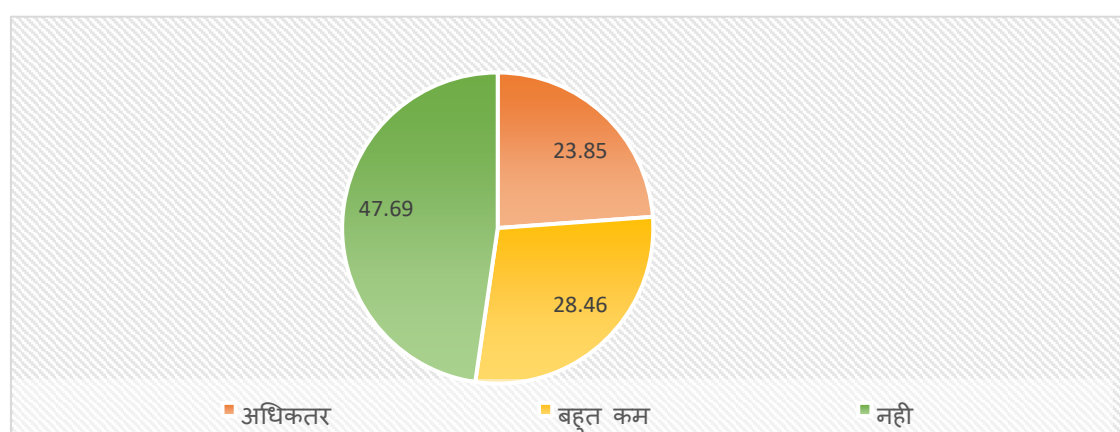
आरेख सं0 5 उत्तरदाताओं की परिवारिक मासिक आय संबंधी विवरण



आरेख सं0 5 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 54.61 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं की परिवारिक मासिक आय 35000-55000 हजार रुपये, इससे कम 23.07 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं की परिवारिक मासिक आय 15000-35000 हजार रुपये एवं 13.07 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं की परिवारिक मासिक आय हजार रुपये और सबसे कम 9.23 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं की परिवारिक मासिक आय 55000 हजार रुपये से अधिक है।

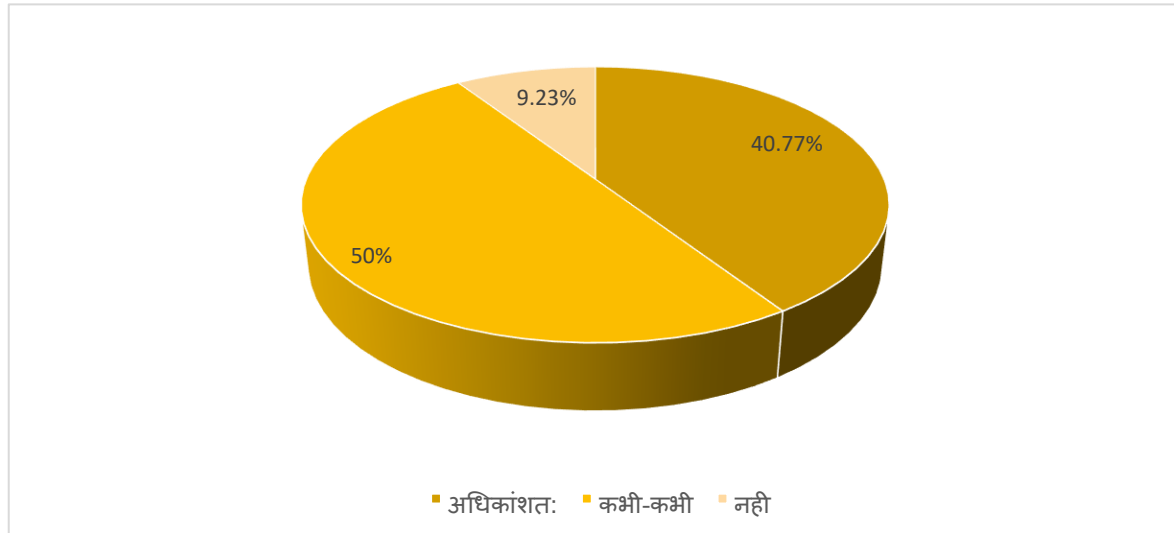
अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सबसे अधिक महिला उत्तरदाताओं की मासिक आय 35000-55000 हजार रुपये है।

आरेख सं0 6 महिला उत्तरदाताओं का पारिवारिक वित्तीय प्रबंधन में ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास



आरेख सं0 6 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 47.69 प्रतिशत महिला उत्तरदाता की परिवारिक वित्तीय प्रबंधन में निर्णय नहीं लेती है, एवं 28.46 प्रतिशत महिला उत्तरदाता की परिवारिक वित्तीय प्रबंधन में बहुत कम ही निर्णय लेती है और 23.85 प्रतिशत महिला उत्तरदाता की परिवारिक वित्तीय प्रबंधन में अधिकतर निर्णय लेती है। अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आज भी महिलाएं परिवारिक वित्तीय प्रबंधन संबंधी निर्णय लेने से वंचित हैं।

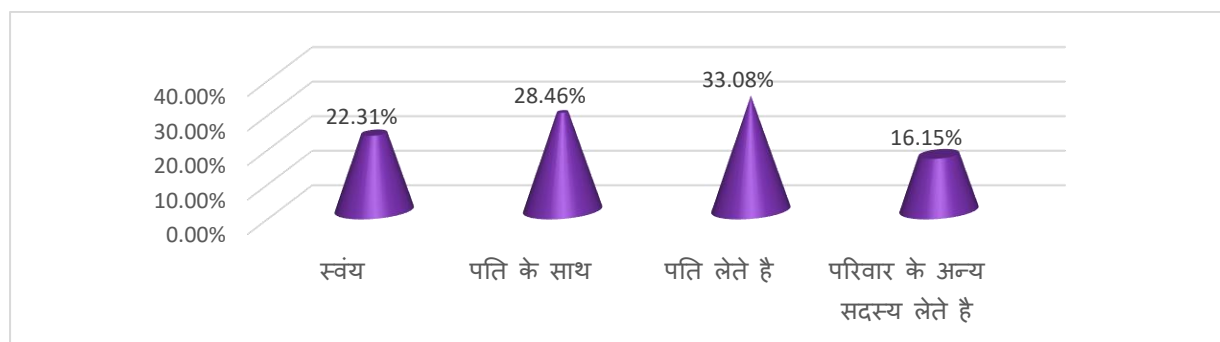
आरेख सं07 महिलाओं का मासिक बजट बनाने में ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास संबंधी विवरण



आरेख सं0 7 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 50 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने स्पष्ट कहा कि मासिक बजट बनाने में उनकी भागीदारी कभी-कभी ही होती है, जबकि 40.77 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने स्पष्ट कहा कि मासिक बजट बनाने में अधिकांशतः उनकी भागीदारी होती ही है, तथा 9.23 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने स्पष्ट कहा कि मासिक बजट बनाने में उनकी भागीदारी नहीं होती है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आज भी शिक्षित होने के बाद अधिकांश महिलाएं मासिक बजट बनाने में कभी-कभी ही भागीदार होती हैं। एक नौकरी पेशा महिला उत्तरदाता (आयु 47 वर्ष) का कहना है कि वह अपनी कमाई का एक तिहाई धन परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए दे देती है, किंतु उसके परिवार में अधिकतर वित्तीय प्रबंधन से संबंधित निर्णय उसके पति ही लेते हैं।

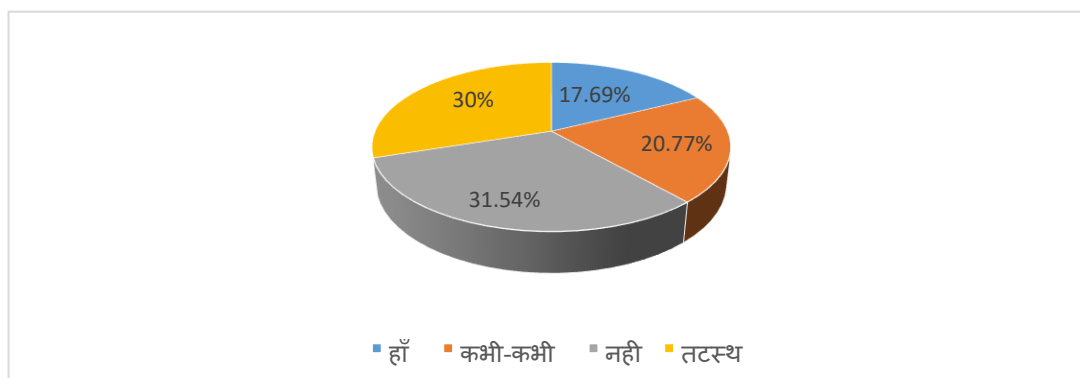
आरेख सं0 8 गृहणियों का बचत संबंधी निर्णय लेने में ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास संबंधी विवरण



आरेख सं0 8 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 33.08 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने कहा कि बचत संबंधी निर्णय उनके पति लेते हैं, एवं 28.46 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने कहा कि बचत संबंधी निर्णय वह अपने साथ ही लेती है, इसके बाद 22.31 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने कहा कि बचत संबंधी निर्णय वह स्वयं लेती है और 16.15 प्रतिशत महिला उत्तरदाता ने कहा कि बचत संबंधी निर्णय उनके परिवार के अन्य सदस्य लेते हैं।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिक्षित होने के बाद अधिकांश परिवारों में बचत संबंधी निर्णय महिला उत्तरदाता के पति या परिवार के अन्य सदस्य लेते हैं।

आरेख सं0 9 गृहणियों के द्वारा निवेश सम्बन्धी निर्णय में ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास सम्बन्धी विवरण



आरेख सं0 9 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सर्वाधिक 31.54 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि वित्तीय निवेश सम्बन्धी वे नहीं लेती है, इस सर्वेक्षण में 30 प्रतिशत महिला उत्तरदाता तटस्थ रही, 20.77 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि वित्तीय निवेश से सम्बन्धी निर्णय वे कभी-कभी ही लेती है और 17.69 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि वे हमेशा से ही वित्तीय निवेश से सम्बन्धी निर्णय लेती है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि परिवारों में अधिकांश महिला उत्तरदाता स्वयं वित्तीय निवेश सम्बन्धी निर्णय नहीं लेती है।

तालिका सं0 2 वित्तीय निर्णय, वित्तीय बचत वित्तीय मासिक बजट और निवेश सम्बन्धी निर्णय में महिलाओं की भागीदारी नहीं होने के कारण सम्बन्धी विवरण

कारण	रैंक पद्धति
आत्म विश्वास की कमी	5
वित्तीय साक्षरता का अभाव	6
समय की कमी और दोहरी भूमिका	4
पुरुष प्रधान सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक अपेक्षाएं	2
परिवार का लैंगिक भेद-भाव सम्बन्धी व्यवहार	1
जानकारी न होना	7
आर्थिक स्वतंत्रता	3

तालिका सं0 2 से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण शामिल महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि वित्तीय निर्णय, वित्तीय बचत वित्तीय मासिक बजट और निवेश सम्बन्धी निर्णय लेने में उनके पीछे होने का पहला मुख्य कारण परिवार का लैंगिक भेद-भाव सम्बन्धी व्यवहार है, उसके बाद दूसरा कारण पुरुष प्रधान सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक अपेक्षाएं, तीसरा कारण आर्थिक स्वतंत्रता में कमी। भारत की पुरुष प्रधान संस्कृति महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में सबसे बड़ी

बाधा है और यह समस्या शादी के बाद शुरू नहीं होती, बल्कि जन्म से ही शुरू हो जाती है, कम उम्र से ही महिलाओं को अक्सर वित्तीय प्रबंधन की बुनियादी बातें नहीं सिखाई जाती हैं उन्हें निवेश के बारे में जानकारी बहुत कम या बिल्कुल जानकारी नहीं दी जाती ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक मामलों में लड़कियों को शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाती, कहा जाता है, तुम्हें ससुराल जाना है और ससुराल में कहा जाता है तुम बहुत हो, बहुतों को हर मामले में नहीं बोलना चाहिए। जहाँ अनेक परिवारों में महिलाएं खुद कमाती हैं, किंतु परिवार और बच्चों के भरण-पोषण के लिए अपनी कमाई पुरुषों को सौंप देती हैं आर्थिक सहायता के लिए कभी अपने पिता पर तो शादी के बाद पति पर निर्भर हो जाती है। इतना ही नहीं समय के साथ यह एक आदत बन जाती है दूसरे सांस्कृतिक मान्यताएं उन्हें वित्तीय प्रबंधन की अनुमति नहीं देती है। वित्तीय बचत और निवेश सम्बन्धी योजनाओं की जानकारी का न होना, उनका कहना कि यदि कभी मौका मिला तो परिवार बच्चों की जिम्मेदारी अर्थात दोहरी भूमिका और समय की कमी के कारण वह इस तरफ ध्यान नहीं दे पाती, इसके बाद आत्म विश्वास की कमी और वित्तीय साक्षरता का अभाव, जिसमें बजट बनाना, बचत करना और निवेश करना शामिल है।

तालिका सं0 3 महिलाओं का वित्तीय प्रबंधन के निर्णय से सम्बन्धित ज्ञान, दृष्टिकोण एवं अभ्यास का सहसंबन्ध (Correlation)

	शिक्षा	ज्ञान	दृष्टिकोण	अभ्यास
शिक्षा	1	.246**	.214**	.142
ज्ञान	.246**	1	-.054	.101
दृष्टिकोण	-.214**	.054	1	.300**
अभ्यास	.142	.101	.300**	1

is significant at the 0.01 level

तालिका सं0 से स्पष्ट है कि शिक्षित महिलाओं का वित्तीय प्रबंधन के निर्णय से सम्बन्धित ज्ञान एवं शिक्षा 0.01 पर एक अत्यधिक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबन्ध (.246**) पाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का स्तर बढ़ने से महिलाओं के ज्ञान में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार दृष्टिकोण और अभ्यास के बीच अत्यधिक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबन्ध (.300**) पाया गया है, इससे यह पता चलता है कि शिक्षित महिलाओं का दृष्टिकोण उनके वित्तीय प्रबंधन के निर्णय को प्रभावित करता है।

सीमाएं

यह शोध अध्ययन मधुबनी जिले के केवल लखनौर प्रखण्ड के कुछ ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित है, इसलिए निष्कर्ष अन्य क्षेत्रों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष से पता चलता है कि एक प्रमुख बाधा महिलाओं में वित्तीय साक्षरता की कमी है, जो एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। साथ ही कम उम्र से ही महिलाओं को अक्सर वित्तीय प्रबंधन की बुनियादी बातें नहीं सिखाई जाती है। इतना ही नहीं ससुराल में परिवार के लैंगिक भेद-भाव सम्बन्धी व्यवहार, पुरुष प्रधान सांस्कृतिक मानदंड, सामाजिक अपेक्षाएं और आर्थिक स्वतंत्रता में कमी उनके पूर्ण सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा बनी हुई है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी व्यापकता अभी भी है, तथा माता-पिता को अपनी बेटियों को परिवार के वित्त और निवेश संबंधी चर्चाओं में प्रारम्भ से ही शामिल करने का प्रयास करना चाहिए। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार के अवसर और कानूनी अधिकार प्रदान करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, फिर भी अपने वित्त पर नियंत्रण रखने के लिए महिलाओं को वित्तीय साक्षरता की शिक्षा प्रारम्भ से ही देना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षित होकर वित्तीय अवधारणाओं को समझना, समझदारी भरे निर्णय लेना और अच्छी वित्तीय आदतें व्यक्तियों को वित्तीय सुरक्षा प्राप्त करने में मदद करती है। अध्ययन से स्पष्ट है कि इस विषय पर अभी और अध्ययन करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

- Sinha S. (2017). Multiple roles of working women and psychological well-being. Industrial psychiatry journal, 26(2), 171–177.
- Vankar Namrata, Joshi Sanjay (2020) Financial Literacy and Women's Role in Family Investment Decision-Making IJIRT, ISSN: 2349-6002
- Priyanka, Swathi The Family financial trap : Womens struggle for financial autonomy, Indian Journal of Law and Legal Research, Vol-VI, Issue-VI, ISSN: 2582-8878.
- Anirudh Tagat (2021) Female matters: Impact of a workfare program on intra-household female decision-making in rural India, World Development Perspectives, Vol-22, P.- 100326
- The economic times (2026)
- पीवी हैप्पी (2018) “परिवारों में शिक्षा की भूमिका और महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति”, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (jetir), ISSN: 2349-5162, खंड 5, अंक 10, पृ0सं0124-127

- कोचर अंजिनी (2022) वित्तीय पहुंच परिवार में महिलाएं निर्णय लेने की भूमिका को किस प्रकार प्रभावित करती हैं, [Ideasforindia.in/topics/human-development/how-financial-access-impacts-women-s-decision-making-role-in-households-hindi](https://ideasforindia.in/topics/human-development/how-financial-access-impacts-women-s-decision-making-role-in-households-hindi)
- शिवंगी यादव, प्रेरणा बलकुर और सी श्रीधारी (2023) बैंगलोर में कामकाजी और गैर-कामकाजी महिलाओं के बीच वित्तीय साक्षरता पर एक अध्ययन, *Shanlax International Journal of Management* 10(3):101-105